Final--August 16, 2014

बैंक-खाता एक; फायदे अनेक

मैनेजर: रामराम, काका

गोपाल: रामराम. आओ, आओ मैनेजर सा'ब. बैठो सा'ब.

मैनेजर: जानते हो न, गाँव में खाता खुलवाने का कैंप लगा है. तुम तो दिखे ही नहीं. खाता नहीं खुलवा रहे हो क्या?

गोपाल: क्या खुलवाएँ सा'ब, पैसे ही नहीं बचते. दाल-रोटी मुश्किल से चलती है.

मैनेजर: थोड़े तो बचते होंगे! अच्छा यह बताओ, पान-बीड़ी, गुटका खाते हो?

गोपाल :पान-बीड़ी तो नहीं, हाँ, गुटका खा लेता हूँ.

मैनेजर: अच्छा, दिन में कितने गुटके खाते हो?

गोपाल: यही कोई चार-पाँच.

पत्नी: चार-पाँच!!!, अरे....आठ-दस खा जाते होंगे.

मैनेजर: यह गुटका कितने का आता है?

गोपाल: अब कितनी महंगाई है, गुटके भी महंगे आते हैं. वैसे मैं दो रुपये वाला खाता हूँ.

मैनेजर: मतलब रोज दस रुपये गुटकों पर खर्च करते हो. अगर गुटका खाना बंद करो तो रोज दस रुपये बच सकते हैं?

पत्नी: सा'ब कभी-कभी तो उससे भी ज्यादा खाते हैं.

मैनेजर: अब रोज के दस, तो महीने के हुए तीन सौ और वर्ष में तीन हजार छः सौ रुपये बचा सकते हो कि नहीं?

गोपाल: साल में तीन हजार छः सौ रुपये?

मैनेजर: हां, और बैंक में खाता खुलवा कर उसमें जमा करवाओगे तो बैंक ब्याज देगा वह अलग से! यदि हर महीने आवर्ती जमा योजना में एक निश्चित रकम जमा कराओगे तो उसमें अधिक ब्याज मिलेगा और समय पूरा होने पर एक बड़ी रकम भी मिलेगी.

पत्नी: इतने सारे पैसे? और ऊपर से ब्याज? फिर तो हमारे पैसे कितने बढ़ जाएंगे! इतने में तो हम अपनी कमली के लिए सिलाई मशीन खरीद सकते हैं.

मैनेजर: यह बताओ भैया! अगर थोड़े से पैसे की अचानक जरूरत आ गई, कोई बीमारी या और कुछ, तब क्या करते हो?

गोपाल : सा'ब थोड़े से पैसे तो बचा कर रखते हैं और ज्यादा रुपये चाहिए तो महाजन से कर्ज भी लेते हैं.

मैनेजर: अच्छा, कहां रखते हो?

गोपाल: किसी मटके में या फिर कपड़ों की तह में.

पत्नी: मैं तो कपड़े में गांठ बांध कर अनाज के डिब्बे में छिपा देती हूँ.

मैनेजर: इसमें तो गुम हो जाने, चोरी हो जाने या चूहों द्वारा कुतर दिए जाने का भय रहता है.

गोपाल : बात तो आपकी सही है. एक बार बरसात में गाँव में पानी भर गया तब घर की चीजों के साथ-साथ मेरे सारे पैसे भी बह गए थे.

मैनेजर: अब बैंक में जमा कराए होते तो बच जाते और समय पर काम भी आते!

गोपाल: पर बैंक में भी पानी भर गया था.

मैनेजर: खाते का सारा हिसाब मुख्य कंप्यूटर में सुरक्षित रहता है. इसलिए आपका पैसा हमेशा सुरक्षित रहता है और आप कभी भी, कहीं से भी पैसा निकाल सकते हो.

मैनेजर: अब मैं तुम्हें खाता खुलवाने के और फायदे बताता हूँ. मनरेगा के भुगतान, स्कूल में पढ़ रहे बच्चों की छात्रवृति, सरकारी योजनाओं की सब्सिडी आदि सरकारी लाभ भी अब सीधे बैंक में जमा होंगे. इसलिए भी खाता खुलवाना जरूरी है.

मैनेजर: हां, अगर आपने आधार कार्ड बनवाया हो और उसे अपने बैंक-खाते से जोड़ देते हो, तो आपको मिलने वाले सरकारी लाभ सीधे ही आपके खाते में जमा होंगे और उसमें किसी प्रकार की हेराफेरी नहीं होगी.

गोपाल : तब तो सरकारी अनुदान मिलना सुरक्षित हो जाएगा!

मैनेजर: और हां, दूर के किसी अन्य गांव या शहर में रहने वाले रिश्तेदारों, जान-पहचान वालों को भी बैंक से आसानी से रुपये भेजे सकते हैं जो उसी दिन उन्हें मिल जाते हैं और वे जब चाहे निकाल भी सकते हैं. तो अब बताओ, खाता खुलवाना जरूरी है न?

गोपाल : जरूर सा'ब. मेरा खाता कैसे खुल सकता है?

मैनेजर: क्या तुम्हारे पास आधार कार्ड है?

गोपाल : हां सा'ब, है.

मैनेजर: बहुत अच्छा! फिर तो आपका खाता खोलना और भी आसान हो गया. और यदि आपके किसी दोस्त या रिश्तेदार के पास नहीं है, तो जगह-जगह खाता खुलवाने के कैम्प खुले हैं वहां जा कर उन्हें खाता खुलवाने के लिए कहें.

गोपाल : ठीक है.

मैनेजर: वैसे बैंक में खाता खोलने के लिए फोटो के साथ पहचान-पत्र और पते का प्रमाण जरूरी होता है, जैसे राशन कार्ड, लाइटबिल, मतदान कार्ड, आधार कार्ड - इनमें से किसी भी एक दस्तावेज की जरूरत होती है.

गोपाल: ये सब तो हमारे पास हैं और आधार कार्ड भी है. तब तो हम कल ही खाता खुलवाने आ जाते हैं.

पत्नी : और तुम गुटका खाना बंद करोगे, कल से नहीं आज से. और फिर जाकर आज ही खाता भी खुलवा लोगे. कहे देती हूँ, हाँ....

किसन: गोपाल भैया रामराम. कोई महेमान आए हैं का?

गोपाल: अरे किसन भैया! आओ, आओ. ये बैंक के साहब आए हैं. इन्होंने हमें खाते खुलवाने के फायदे बताए और अब हमारा खाता भी खुलवा देंगे. तुम भी खाता खुलवा लो, भैया.

पत्नी : सा'ब ये हमारे भैया हैं, पास के गाँव में रहते हैं. पर उनके गाँव में तो बैंक ही नहीं है, तो उनका भी खाता खुल सकेगा?

मैनेजर: क्यों नहीं भाई. उनका भी खाता खुल सकेगा. हमारा प्रतिनिधि, जिसे बैंक-मित्र कहते हैं, मशीन के साथ गाँव में आएगा और खाता खोल कर वही सारा लेन-देन करवाएगा. पैसा जमा भी करेगा और मशीन से प्रिंट करके रसीद भी देगा.

किसन: और पैसा निकालना हो तो वह भी देगा?

मैनेजर: हां, जरूर. बैंक-मित्र जरूरत पर रुपये भी देगा, साथ ही, बैंक आपको रूपे कार्ड देगा जिसकी मदद से आप एटीएम से रुपये निकाल सकते हैं. और हां, रूपे कार्ड के साथ एक लाख रुपये का ऐक्सिडेंट बीमा भी मुफ्त में दिया जाता है.

यदि बैंक मित्र नहीं आता है तो भी जब मर्जी हो, नजदीकी बाजार के एटीएम से या किसी बैंक में जाकर उसके एटीएम से पैसा निकाल सकते हो.

मैनेजर: बीसी मशीन पर अंगूठा रखवा कर पहचान करेगा और खाते में जमा पैसे में से निकाल कर पैसा देगा.

किसन: न भैया न. अंगूठा तो मैं न लगाऊँ.

मैनेजर : अरे ! डरो मत. बैंक साहूकार की तरह अंगूठा थोड़े ही लगवाता है! सभी के अंगूठे के निशान अलग होते हैं. किसी के एक जैसे नहीं होते. मशीन अंगूठे के निशान से पहचान करता है कि यह खाता किसका है.

गोपाल : और साहूकार की तरह हिसाब में भी कोई गोलमाल नहीं. है न सा'ब?

मैनेजर: मैनेजर: अरे, बिल्कुल नहीं. बैंक सारे लेनदेन की रसीद देता है और खाते की पासबुक भी देता है, जिसमें पैसे जमा करवाने और निकालने का रिकॉर्ड रहता है. और हां, आप

खाते में नोमिनेशन भी कर सकते हैं और खाते में अपने बच्चे और पत्नी का नाम भी जोड़ सकते हैं.

मैनेजर: बाद में जरूरत के समय आपके खाते में पैसे न हों तब भी बैंक आपको उधार दे सकता है और आप ऐसा उधार चुकाने में नियमित रहते हैं तो बैंक 2000/- रुपये तक का उधार दे सकता है, जिसे ओवरड्राफ्ट कहते हैं. और इसे 5000 रुपये तक बढ़ा सकते हैं.

मैनेजर: इस सुविधा से अब आपको साहूकार के पास कर्ज़ लेने के लिए नहीं जाना पड़ेगा.

किसन: सा'ब मुझे तो विश्वास ही नहीं होता!

मैनेजर: अब और एक फायदा बताऊँ खाता खुलवाने का. बैंक छः मास देखेगा कि आप खाते को नियमित चला रहे हैं तो बैंक से और भी सुविधाएं, लोन आदि मिल सकते हैं.

गोपाल : पर इस उधार पर बैंक ब्याज तो लेगा न?

मैनेजर: ब्याज तो लगेगा, पर बहुत कम दर पर....

किसन: मैंने सुना है बैंक साहूकार से ज्यादा ब्याज लेता है? क्या सही है, सा'ब?

मैनेजर: अरे ! यह तो आपको भरमाने के लिए किसी ने कहा होगा. देखो, बैंक 12 टका ब्याज लेता है जो एक साल के लिए होता है. मतलब महीने का 1 टका हुआ. अब साहूकार तो साथ में जमीन भी गिरवी रख लेता है और ब्याज भी लगभग 5 टका महीने का लेता है. सोचो, बैंक से कितना ज्यादा हुआ?

किसन: अरे बाप रे... ! मतलब साहूकार हमें कितना लूटता रहा है? मूलचंद सेठ तो 3 टका महीना ब्याज लेता है और हमारी जमीन भी गिरवी रख लेता है. सेठ लक्ष्मीचंद तो उससे भी एक कदम आगे है वह 5 टका महीना ब्याज लेता है.

गोपाल: इतना कम ब्याज हो, तो और कहीं से क्यों, हम बैंक से उधार न लें? सा'ब, बैंक और किस-किस बात के लिए उधार देता है?

मैनेजर : बैंक की बहुत सारी योजनाएँ हैं.

मैनेजर: बैंक खेती के लिए बीज, खाद, दवा आदि के लिए लोन देता है. ट्रैक्टर, अन्य साधनों की खरीद के लिए भी लोन देता है. इतना ही नहीं, मुर्गी, मछलीपालन, पशुपालन और अन्य कई कामधंधे के लिए बैंक लोन देता है.

मैनेजर: और सुनो, बैंक बच्चों की पढ़ाई के लिए तथा मकान बनाने या खरीदने के लिए भी लोन देता है.

पत्नी : तब तो मेरी कमली बेटी के लिए सिलाई मशीन में पैसे कम पड़े तो बैंक से लोन मिल सकता है, है न?

मैनेजर: हां, पर कमली को खूब पढ़ाना जरूर. इसके लिए बैंक आपको मदद करेगा. और फिर किसान क्रेडिट कार्ड, जनरल क्रेडिट कार्ड आदि सुविधाएं भी हैं.

किसन: ये कारड काहे के लिए है? उससे हम क्या कर सकते हैं ?

मैनेजर: ये कार्ड बहुत काम की चीज़ है. आप पास के शहर में ख़रीदारी करने जाते हो तो जेब में पैसा सुरक्षित नहीं रहता. कभी गिर जाए, जेब कट जाए तो कितनी परेशानी होती है?

किसन: हाँ सा'ब. हमेशा डर बना रहता है, पैसे खो जाने का.

मैनेजर: अब कार्ड से आप एटीएम मशीन से खुद ही पैसे भी निकाल सकते हो.

गोपाल: सा'ब, हम वो एटीएम मशीन कैसे चलाएंगे? हमें तो नहीं आता!

मैनेजर: अरे, यह तो बहुत आसान है. कार्ड के साथ हमें एक पिन नंबर मिलता है, जिसकी मदद से हमें चार अंकों का अपना एक गुप्त पिन नंबर बना लेना है और उसको हमेशा याद रखना है. एटीएम से पैसा निकालते समय इस पिन नंबर को मशीन में दर्ज करना होता है तभी पैसा निकलता है. इस पिन नंबर को बहुत संभालकर रखना है और इसे कभी किसी को भी नहीं बताना चाहिए.

गोपाल: सा'ब, फिर?

मैनेजर: फिर मशीन में कार्ड डालने पर वह नंबर पूछेगा, तब यह नंबर दबा कर नंबर डालना है. वह नंबर सही होने पर ही मशीन काम करेगा और उसमें हमें कुछ विकल्प पूछे जाएंगे

जैसे बैलेंस जानना, पैसे निकालना, अपना पिन नंबर बदलना वगैरह. फिर अगर पैसा निकालना है तो जितने रुपये निकालने हैं, वह नंबर वाले बटन दबा कर बताना है. बस! फिर अपने आप उतने रुपये निकल आएंगे. और साथ में छोटी सी पर्ची भी निकलेगी कि अब आपके खाते में कितने रुपये बचे.

किसन: अरे यह तो कितना अच्छा है ! यह कार्ड तो बड़े काम की चीज़ है.

मैनेजर: एटीएम में तो यूनिवर्सल एक्सेस होता है. मतलब आप कहीं भी जाएं तो उस शहर या गांव में भी पैसे निकाल सकते हैं. अगर कभी बैंक-मित्र नहीं आता है तो आप हाट जा कर या किसी दूसरे बैंक के एटीएम से भी पैसे निकाल सकते हैं.

मैनेजर: इतना ही नहीं, कार्ड से आप दूकानों में जाकर सीधे खरीदारी कर सकते हो और उतनी रकम आपके खाते से अपने आप कट जाती है और दूकानदार आपको माल दे देता है.

गोपाल: अरे वाह! बिना पैसे के ख़रीदारी!

किसन: यह तो बहुत अच्छा. अरे सा'ब यहाँ मंडी में हमें गंदे और पुराने, फटे हुए नोट मिलते हैं. फिर शहर के दूकानदार हमसे वह लेने के लिए तैयार नहीं होते. हमें बट्टे वालों से आधे पैसे में बदलवाने पड़ते हैं.

गोपाल: और छुट्टे पैसे की भी मगज़मारी होती है.

मैनेजर: ऐसी बात है? तो सुनो, बैंक में आपके पुराने, कटे-फटे नोटों को बदलने की सुविधा भी है और सिक्कों का वितरण भी होता है.

गोपाल: अच्छा? लो, हम तो इसके मारे कितने परेशान होते रहे!

मैनेजर: सच बात तो यह है कि अब आपके कई काम बैंक में जाए बिना भी हो सकते हैं. अच्छा बताओ, तुम्हारे पास मोबाइल है क्या?

किसन : हां सा'ब, मेरे पास यह है न!

मैनेजर: अब इस मोबाइल से भी आपके कई काम बिना बैंक में जाए हो सकते हैं!

गोपाल : वह कैसे सा'ब?

मैनेजर : इसे यूएसएसडी सुविधा कहते हैं. एक बार आपको अपना मोबाइल नंबर या तो एटीएम मशीन से अथवा शाखा में जा कर एक फार्म भर कर अपने खाते से जोड़ना होगा. फिर जिस प्रकार आप एसएमएस भेजते हो, वैसे ही संदेश भेज कर अपने खाते का बैलेंस जान सकते हो, खाते का छोटा विवरण मंगवा सकते हो और अपने किसी रिश्तेदार, दोस्त या किसी और के खाते में पैसा भी भेज सकते हो.

गोपाल: इससे तो हमें अच्छी सुविधा मिल जाएगी, पर हमारे पास तो महंगा और अच्छा वाला मोबाइल नहीं है.

मैनेजर: यह काम तो सभी मोबाइल से हो सकता है.

किसन : पर सा'ब उसमें कोई खतरा तो नहीं? हमारे पैसे चले जाएं या और किसी को पता चल जाए!

मैनेजर: यह बिल्कुल सुरक्षित है, चिंता की कोई बात नहीं है.

मैनेजर: बैंक आपके जीवन में खुशहाली लाने के कितने प्रयास करता है. एक और उदाहरण दूँ. बैंक ने कई जगह ग्राम सलाह-केंद्र भी खोले हैं.

गोपाल : वह किसलिए?

मैनेजर: वह इसलिए कि किसानों को अच्छे बीज, खाद, दवाइयों और नई तकनीकों, सिंचाई वगैरह के लिए जानकारी दी जा सके. मंडी और बाज़ार संबंधी सलाह दे सके.

किसन : उसके लिए क्या, पैसा देना होगा ?

मैनेजर: अरे नहीं, यह तो बिल्कुल मुफ्त होगा.

किसन: अरे वाह ! क्या कहने. बैंक हमारे लिए कितना कुछ करता है.

मैनेजर: तो तुम भी बैंक की मदद कर सकते हो. अपने साथियों को भी यह जानकारी दो और अपने साथ उन्हें भी हर घर में कम से कम एक खाता खोलने के लिए कहो.

किसनः जरूर सा'ब, हम अपने गाँव के सभी लोगों तक यह बात पहुंचाएंगे और उनको खाता खोलने के लिए समझाएँगे.

मैनेजरः अच्छा, चलता हूँ. बैंक में जरूर आ जाना.

किसनः हाँ, सा'ब यह तो हमारे भले के लिए तो है. जरूर आएंगे.

गोपालः आपका बहुत-बहुत आभार सा'ब; आपने हमें अच्छी जानकारी दी.

पत्नीः हाँ. अब हमारे जीवन में खुशहाली आएगी. हमारे खेत हरे-भरे होंगे, बच्चे खूब पढ़ेंगे और हम अपने सारे काम अच्छी तरह पूरे कर पाएंगे.

मैनेजरः ऐसा ही होगा.....